7-3-67 ओम् शान्ति 21 प्रातः क्लास

अब तुम किसके सम्मुख बैठे हो। बाप दादा के। बाबा भी कहना पड़े तो दादा भी कहना पड़े। बाप भी इस दादा के द्वारा ही तुम्हारे सम्मुख बैठे हैं। बाहर में तुम रहते हो तो वही बाप को याद करना पड़ता है। पत्र लिखना पड़ता है। यहाँ तुम सम्मुख हो। बात-चीत करते हो। किसके साथ? बाप दादा के साथ। यह है ही ऊँच ते ऊँच दो आथारटी। ब्रहमा है साकारी। और शिव है निराकारी। अब तुम जानते हो कि ऊँच ते ऊँच आथारटी बाप से कैसे मिलना होता है। बेहद का बाप जिनको पतित पावन कह बुलाते हैं अब प्रैक्टीकल में ही तुम उनके सम्मुख बैठे हो। बाप बच्चों की पालना कर रहे हैं। पढ़ा रहे हैं। घर में बैठे-2 भी बच्चों को राय मिलती है कि ऐसे-2 चलो। अब बाप की श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ट ते श्रेष्ट बन जावेंगे। बच्चे जानते हैं कि हम ऊँच ते ऊँच बाप की मत पर ऊँच ते ऊँच वर्सा, मर्तबा पाते हैं। मनुष्य सृष्टी में ऊँच ते ऊँच यह है मर्तबा। इन ऊँच को नमस्ते करते हैं। मुख्य बात है ही पवित्रता की। मनुष्य तो मनुष्य ही है। परन्तु कहाँ तो वो ही विश्व का मालिक कहाँ फिर वही अब के मनुष्य। यह तुम्हारी बुधी में ही है कि भारत 5000 वर्ष पहले ऐसा था। हम ही विश्व के मालिक थे। और किसीकी बुधी में यह नही है। हम ही विश्व के मालिक थे। और किसकी बुधी में यह नही है। इनको भी पता थोड़ेही है। बिल्कुल अंधेरे में है। अब बाप ने आकर बताया है। ब्रहमा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रहमा कैसे होते हैं। यह बड़ी गुहय रमणीक बातें हैं। और कोई समझ नही सकते है। सिवाय बाप के और कोई यह नालेज दे नही सकते हैं। निराकार बाप आकर पढ़ाते हैं। कृष्ण भगवानोवाच है। बाप ही कहते तुमको पढ़ा कर सुखी बनाता हूँ। फिर मैं अपने निर्वाणधाम में चला जाता हूँ। अब तुम बच्चे सतोप्रधान बन रहे हो। जो जितना पुरुषार्थ करेंगे इसमें खर्चे आद की तो बात ही नही है। सिर्फ अपने को आत्मा समझ कर बाप को याद करना है। बिगर कौड़ी खर्चे 21 जन्म के लिये तुम विश्व का मालिक बनते हो। कुछ भी खर्चा नही है। पाई पैसा भेज भी देते हैं सो भी अपना ही भविष्य बनाने के लिये। कल्प पहले जिसने जितना जिसने खजाने में डाला है वो अब भी उतना ही डालेंगे। नो तो जास्ती नां ही कम डाल सकते है। यह बुधी में ज्ञान है इसलिये ही कोई हंसने की बात ही नही है। बिगर कोई भी फिक्र के हम गुप्त अपनी राजधानी स्थापन कर रहे है। यह बुधी में स्मरण करना है। तुम बच्चों को कितना खुशी में रहना चाहिये। और फिर नष्टोमोहा भी बनना है। यहाँ नष्टोमोहा होंगे फिर तुम वहाँ मोहजीत राजा रानी बन जाओगे। तुम जानते हो कि यह पुरानी दुनियाँ तो अब खत्म होनी ही है। अब वापस जाना है तो फिर इसमें मतलब ही क्यों रखें? कोई बिमार होता है तो डाक्टर कह देते है कि बहुत होपलेस केस है। फिर उनसे मतलब निकल जाता है। समझते हैं कि आत्मा एक शरीर छोड़ कर जाकर दूसरा लेती है। आत्मा तो अविनाशी ही है ना। आत्मा चली गई, फिर शरीर खत्म हो गया। फिर उनकी आत्मा को बुलाते हैं। शरीर तो आ नही सकता है। परन्तु बुधी में याद शरीर ही आता है। अब वो तो खत्म हो गया है फिर उनको याद करने से फायदा ही क्या होगा। अभी बाप कहते हैं कि तुम नष्टोमोहा बनो। अपने दिल से पूछना चाहिये हमारा कोई में मोह तो नही है। नही तो वो पिछाड़ी में याद जरूर आवेगा। नष्टोमोहा होंगे तो यह पद जरूर पावेंगे। स्वर्ग में तो सब आवेंगे। वो कोई बड़ी बात नही है। बड़ी बात तो है कि सजा नीं खाकर पद पाना। योगबलसे हिसाब किताब चुक्तु करेंगे तो फिर सजायें नही खावेंगे। पुराने सम्बन्ध छी-2 याद नही पड़ने चाहिये। अब तो हमारा ब्राहमणों से नाता है। फिर तुम्हारा देवताओं से नाता होगा। अब का नाता सबसे ऊँचा है। अब तो ज्ञान के सागर बाप के बने हो। सारी नालेज बुधी में है। आगे थोड़ेही यह जानते थे कि सृष्टी चक्र कैसे फिरता है। अब बाप ने समझाया है। बाप से वर्सा मिलता है तब तो बाप के साथ लव है ना। बाप द्वारा स्वर्ग की बादशाही मिलती है। इनका यह यादगार है। भारत में ही भागीरथ गाया हुआ है। बाप आते भी भारत में ही है। शिव के मन्दिर

سیڑھی اترنے میں وقت لگتا ہے – اور چڑھنے میں صرف اسم جنم ہی لگتا ہے – سو تو بابا ... میں آتے ہیں اسی مکان میں
اسی ڈریس میں کب ملے تھے کہتے ہیں ہاں بابا کلپ کلپ آپ ملتے ہیں

वैकुन्ठ मे वैल दिखाते है। इसका भी अर्थ नही समझते है। शिव और शंकर की सवारी दिखाते है। अब शिव मूल वतन मे शंकर सूक्ष्म वतन का रहने वाला है दोनो की ही सवारी वैल पर तो हो नही सकती है। वहाँ वैल कहाँ से आया। कृष्ण के मन्दिर मे कब भी वैल नही दिखाते है। शिव के मन्दिर मे ही रखते है। वाँ क कहाँ स्वारी करते है। वो तो यहाँ आ नही सकते है। मनुष्य कहते है कि सर्वव्यापी है। नाम रूप से न्यारे है। फिर वो वैल पर कैसे वैठेगा। कितना घोटाला है। इसको कहा ही जाता है भक्ति मार्ग दुर्गती मार्ग। 84जन्मों की सीढ़ी वुधी मे वैठी है। तुम जान चुके हो कि यह 84का चक्र है। वहुत पूछते है कि 84के चक्र से छुटी नही हो सकती। वाप कहते है कि नही। सीढ़ी उतरने मे समय लगता है। चढ़ने मे सिर्फ यह अन्तिम जन्म ही लगता है। इसलिये ही सेकिंड कहा जाता है। तुम त्रिलोकी नाथ त्रिकाल दर्शी भी वनते हो। तुमको पहले यह पता था क्या कि हम त्रिलोकी नाथ वनने वाले है। अब वाप मिला है। अब वाप मिला है। शिक्षा देते है तब समझते हो। वावा पास कोई आते है तो वावा पूछते है आगे इसी ड्रेस मे इसी मकान मे कब मिले थे? कहते है हाँ वावा कल्प-2 मिलते ही आते है। तो समझा जाता है कि ब्रह्मा कुमारी ने ठीक समझाया हुआ है। अब तुम वच्चे स्वर्ग के झाड सामने देखते हो। नजदीक हो ना। मनुष्य वाप के लिये कहते है कि नाम रूप से न्यारा है। तो फिर वच्चे कहाँ से आवेंगे। वो भी नाम रूप से न्यारे हो जावें। अक्षर जो भी कहते है विलकुल रांग। जिन्होंने कल्प पहले समझा होगा उनकी ही वुधी मे वैठेगा। प्रदर्शनी मे देखो कैसे-2 आते है। कोई तो सुनी सुनाई वातों पर ही लग जाते है कि यह तो पहचवह है। तो समझा जाता है कि अपने कुल का नही है। अनेक प्रकार के मनुष्य है। तुम्हारी वुधी मे सारा झाड़ ड्रामा सृष्टी चक्र का ज्ञान आ गया है। अब पुरुषार्थ करना है। वो भी ड्रामा अनुसार ही होता है। ड्रामा मे नूंध है। ऐसे भी नही कि ड्रामा मे पुरुषार्थ करना होगा तो होगा। यह कहना रांग है। ड्रामा को पूरा समझा नही है। उनको फिर नास्तिक कहा जाता है। वाप से प्रीत रख नही सकते है। ड्रामा के राज़ को उल्टा समझने कारण गिर भी पड़ते है। फिर समझा जाता है कि इनकी तकदीर मे ही नही है। विघ्न तो अनेक प्रकार के आवेंगे ही। उनकी प्रवाह नही करके वाप कहते है जो तुमको अच्छी-2 वाते सिखाते है वो ही सुनो। वाप को याद करने से खुशी वहुत रहेगी। वुधी मे है कि अब तो 84का चक्र पूरा होता है। अब जाते है अपने घर। ऐसे-2 अपने साथ वाते करनी है। एक भी नही जा सकते है साजन तो पहले-2 चाहिये ना। पीछे वरात। गाया भी हुआ है भोलानाथ की वरात। भोलानाथ को पहले जाना पड़े नम्बरवार ही जावेंगे ना। सवको नम्बरवार ही जाना है। इतना झुण्ड कैसे नम्बरवार जाता होगा। मनुष्य पृथ्वी पर कितनी जगह लेता है। कितना फरनीचर जागीरी आद चाहिये। आत्मा तो विंदी है। आत्मा को क्या चाहिये। कुछ भी नही। कितनी छोटी जगह लेती है। वुधी जानती है कि इस साकारी झाड़ मे और निराकारी झाड़ मे कितना फर्क है। वो है विंदियों का झाड़। यह सव वाते वाप ही वुधी मे विठाते है। दुनियाँ मे कोई सुन नही सकते है। तुमको अभी वाप घर और राजधानी याद दिलाते है। तुम वच्चे रचता को जानने से सृष्टी चक्र की आद मध्य अन्त को भी जान गये हो। तुम त्रिकाल दर्शी आस्तिक हो। दुनियाँ भर मे कोई भी आस्तिक नही है। वो है हद की पढ़ाई। यह है वेहद की पढ़ाई। वो है अनेक टीचर पढ़ाने वाले। यहाँ एक ही टीचर है पढ़ाने वाला। यहाँ फिर वण्डर है कि यही वाप भी है तो टीचर भी है तो गुरु भी है सारे वर्ल्ड भर का। परन्तु सवको तो पढ़ना ही नही है ना। वाप को सव जाने तो वहुत भागे वापदादा को मिलने लिये। गॉड-2 गॉड फादर, ऐड्म मे वाप आया है। यह प्रख्यात तव ही होते है जव कि लड़ाई शुरु होती है। फिर कोई आ भी नही सकेंगे। तुम जानते हो कि इन अनेक धर्मों का विनाश भी होना है। पहले-2 एक भारत ही था। और कोई स्वर्ण नही था। अब तुम्हारी वुधी मे सारे भक्ति मार्ग की भी वाते है वुधी से कोई भूला थोड़े ही जाता है। परन्तु याद करते हुये

بابا کہتے ہیں بچے تم تو ساری دنیا کو ... بن جاتے ہیں - میں آتا ہی ہوں آدی سناتن دیوی دیوتا دھرم استھاپن کرنے

(3) ! آتما پرم دھام میں رہنے والی ہے ... یہاں تو آرگنس ملے ہیں 3 پارٹ بجانے کے لئے - یہ شریر ... بابا کو یاد

भी सुना समझाना है कि हमको तो वाप को ही याद करना है। हमको तो अवचर वापस जाना है। तो रवुशी होनी चाहिये नां।तुम वच्चों को समझाया है कि तुम्हारी अव वानप्रस्थ अवस्था है। दो पैसे इस राजधानी राजधानी स्थापन करने में लगाते है। वो भी अपना ही वनाते है कि हमको तो वहां मिले। वो भी जो भी करते है हू वहू कल्प पहले मिसल ही। तुम भी हू-वहू कल्प पहले वाले ही हो। तुम कहते हो वावा आप भी तो कल्पपहले वाले ही हो। हम कल्प-2 वावा आप से मिलते है। श्रीमत पर चल कर श्रेष्टाचारी वनते है। यह वाते और कोई की भी वुधी में नही होगी।तुमको यह रवुशी है कि हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे है श्रीमत पर। वाप सिर्फ कहते है पवित्र वनो। तुम पवित्र वनेंगे तो सारी दुनियां पवित्र वनेंगी। सव वापस चले जावेंगे। वाकी और वातों का तो हम फिकर ही क्यों करें। कैसे सजा रवाते है क्या होगा इसमे हमारा जाता ही क्या है। हमको तो अपना फिकर करना है। और धर्मों की वातों में हम क्यों जावें। हम आदी सनातन देवी देवता धर्म के है। रावण राज्य के कारण श्रेष्ट धर्म,श्रेष्टकर्म को भूल कर भ्रष्ट भ्रष्ट कर्मो में लग गये है। हिन्दु कह देते हैं। वास्तव में इनका नाम ही भारत है। इसका भी हिन्दुस्तान नाम रख दिया है। हिन्दु कोई धर्म नही है।हम लिखते है कि हम आदी सनातन देवी देवता धर्म के है तो वो वहां हिन्दु लगा देते है। क्यो कि जानते नही है कि देवी देवता धर्म कव था। कोई भी समझ नही है। अव इतने ब्र,कु,कु, है यह तो फैमली हो गई नां। और समाज को फैमली थोड़ेई कहेंगे। यह तो फैमली है।घर हो गया नां। ब्रहमा तो है प्रजापिता। सवका ग्रेट-2 गैंड फादर। पहले -2 तुम देवता वनते हो फिर वर्णों में आते हो। वाप कहते है यह वातें कोई शास्त्रों में नही है। ज्ञान का सागर मैं हूं। तुमको ज्ञान देकर मैं भी चला जाता हूं। गीता में कितने गपोडे लगा दियो है। वेसमझी की। वाप के वदले कृष्ण का नाम दे दिया है। गीता झूठी होने कारण सव शास्त्र ही झूठे हो गये है।गीता माता पिता है में शिव वावा नां कि कृष्ण। वावा दवारा गीता के महावाक्य निकलते है। गीता शिव वावा ने गाई है। इसलिये ही कृष्ण का चरित्र कोई है ही नही। यह सव है झूठ। वाप आकर सच्च रवण्ड वनाते है। वाप को ही रूथ कहा जाता है। सत्यनारायण की कथा कहते है नां। शिव वावा सत्य नर से नारायण वनाने की नालेज देते है। ऐम आब्जैक्ट भी सामने ही है। वाकी तो सव है ही झूट का संग। वहां पर तो ऐम आब्जैक्ट कुछ भी है ही नही। कालेज आद में ऐम आब्जैक्ट होती है। तुम्हारा यह कालेज अथावा यूनिवरसिटी है। हास्पिटल भी है। गाया भी जाता है नां ज्ञान अंजन सतगुरु... योगवल से तुम ऐवर हैल्दी और वैल्दी वनते हो। नेचरल क्यूअर करते है नां। अव तुम्हारी आत्मा क्यूअर होने से फिर शरीर भी क्यूअर हो जावेगा। यह है स्प्रिचुअल नेचर क्यूअर। हैल्थ वैल्थ हैप्पीनेस 2।जन्मो लिये मिलता है। ऊपर में नाम लिख दो रूहानी नेचर क्यूअ। मनुष्यों को पवित्र वनाने की युक्तियां लिखना में हर्जा ही क्या है। आत्मा ही पतित वनी है तवही तो वुलाती है नां। आत्मा पहले सतोप्रधान प्योअर थी। फिर तमोप्योअर वनी है। फिर अव प्योअर कैसे वने? भगवानोवाच् मनमनाभव। मुझे याद करो पवित्र वनो तो मैं गैरन्टी करता हू कि तुम प्योअर हो जावेंगे। वावा कितनी युक्तियां वताते है। ऐसे-2 वोर्ड लगा दो। परन्तु कोई ने भी ऐसा वोर्ड लगाया नहीं है। चित्र मुख्य रखे हुये हो अन्दर आकर वोलो तुम आत्मा परमधाम में रहने वाली है।यहां तो आर्गन्स मिले है पार्ट वजाने के लिये। यह शरीर तो विनाशी है नां। वाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। अभी तुम्हारी आत्माअपवित्र है। पवित्र वनो तो घर में वापस चले जावेंगे। समझाना तो वहुत ही सहज है। जो कल्प पहले वाले होंगे वो ही आदर फूल वनेंगे। इसमें डरने की कोई वात नही है। तुम तो अच्छी-2 वातें लिखते होनां।वो गुरु लोग भी मन्त्र देते है नां तो वाप भी मन्त्र देते है मनमनाभव फिर रचता और रचना का राज़ समझाते है। गृहस्थ व्यवहार में रहतेलिए वाप को याद करो। दूसरे को भी परिचय दो।पायलेट, डीर लाईट हाऊस वनो।